

## बाबाजी की अमर कथा

### छठा अध्याय

#### “जय बाबे दी”

गोरखनाथ जी कि मण्डली में से उनका एक चेला बाबाजी की तलाश करने के लिये उडाई मार कर बाबाजी को ढुढने गये। परन्तु बाबाजी पौणाहारी (पवनरूप तथा अन्न जल का त्याग करने वाला) थे यह भरतरी को नजन नहीं आया। धौलगीरी पर्वत कि उची चोटी पर चरण लगे।

जिसे लोग आजकल चरण पादिका का मन्दिर कहते है इस चोटी के नीचे एक गुफा है। इस गुफा में एक बहुत बडा राक्षस रहता था। वह बाबाजी को देखकर कहने लगा “यह घर मेरा है” बाबाजी ने कहा “यह गुफा साधु—सन्त तथा महात्मा पुरुषों को भजन करने योग्य स्थान है तू यहाँ नहीं ठहर सकता” बाबाजी व राक्षस का बहुत बडा ज्ञान रूपी झगडा होता रहा अन्त में राक्षस बाबाजी कि शक्ति देखकर शरण मे आ गया और कहने लगा “प्रभु, आप मुझे अपना दास बना लो, परन्तु मुझे यहाँ से मत निकालो” बाबाजी ने दयारूप होकर कहाँ “लो, आज से तुम गुफा के पहरेदार के रूप मे रहना” और बाबाजी ने उसे वचन दिया कि मेरी गुफा पर बहुत दुर—दुर से भक्तजन अपने कष्टों को दुर करने के लिय आयेगे।

जिस किसी भी भक्त पर उपरी कसर होगी, उसे आप खत्म कर दोगे। यहाँ जो मेरे भक्त आयेगे, जो हमारे लिये रोट प्रसाद लाया करेंगे और तुम्हारे लिये कुदनु (बकरा) भेंट लाया करेंगे। मेरे दरबार पर कुदनु कि बली नहीं चढेगी, तुम्हारी भुख सिर्फ कुदनु कि सुगन्ध से ही मिट जायेगी। यह वचन राक्षस ने स्वीकार कर लिया। चैत में हमारे दरबार पर बडा भारी मेला लगेगा तथा जिसे भी मै लाल बख्खूंगा, वह मेरे दरबार पर कुदनु चढायेगा। राक्षस से किये वचन द्वारा प्रेमी भक्त जन बाबाजी के लिये रोट प्रसाद भेट लाते है। वह राक्षस के लिये कुदनु भेट करते है। बहुत प्रेमी भक्त गण मण्डलीयों के साथ शान्दार झण्डे बनाकर लाते है जो झण्डे बाबाजी के मन्दिर तथा गुफा पर खुब लहरा रहे है।

बाबाजी के ये वचन सुनकर राक्षस गुफा के बाहर पहरेदारी करने लगा तथा बाबाजी गुफा के अन्दर प्रभु भक्ति में लीन हो गये। तभी राज भरतरी ढूढते—ढूढते गुफा के बाहर आ गये और बाबाजी को गुफा से निकालने के लिये हर सम्भव कोशिश करने लगे। जब भरतरी सारी कोशिश करके हार गये तो उसे सोचा कि जो बालक मेरे गुरु को अपनी शक्तियों से हरा सकता है उसे भला मै कहाँ हरा पाउगा। यह सोचकर भरतरी ने बाबाजी कि गुफा के बाहर बाबाजी से प्रार्थना कि “हे बालक नाथ, मै आपको अपनी गुरु बाना चाहता हूँ” यह सुनकर बाबाजी गुफा से बाहर आये और भरतरी से काहाँ “नहीं भरतरी गुरु तो तुम्हारा गोरखनाथ ही रहेगा। चुकिं मै यहाँ अकेले तपस्या कर रहा हूँ, यहाँ मेरा कोइ साथी नहीं है आज से मै तुम्हे अपना साथी बनाता हूँ। आज से हम दौनो प्रभु भक्ति इक्ठे करेंगे”।

बाबाजी कि उदारता देखकर भरतरी जी बाबाजी के चरणों में पड गये कि मै तो आपका चेला बनने के लिये आया था, आपने मुझ पर कृपा कर के मुझे अपना साथी बना लिया। बाबाजी ने राज भरतरी को यह वचन

दिया जिस घर मेरी पुजा होगी वहाँ पर तुम्हारे नाम के भी जय कारे लगाये जायेंगे और बाबाजी ने राज भरतरी को अपनी गुफा से उंचा स्थान दिया। जहाँ आज संगतो के लिय भण्डारे लगते हैं।

जब गोरखनाथ ने देखा कि राज भरतरी भी बाबाजी के साथ वहीं रह गया है तो वह अपनी सम्पूर्ण मण्डली लेकर गुफा कि ओर चल पडा। बाबाजी कि गुफा के बाहर पहुँचकर गोरखनाथ ने वहाँ धूना प्रज्वलीत किया और अपनी सम्पूर्ण शक्ति के द्वारा बाबाजी को गुफा से बाहर लाने कि कोशीश कि, परन्तु जब बाबाजी फिरभी बाहर न आये तब गोरखनाथ ने हाथ जोड कर बाबाजी से प्रार्थना कि की आप कोई मानव रूप न होकर कोई देव शक्ति हों। मैं आपसे हार मानता हूँ और मैं अपनी जीवन लीला यही पर समाप्त कर रहा हूँ।

लेकिन इससे पहले मैं आपके सम्पूर्ण रूप के दर्शन करना चाहता हूँ गोरखनाथ के इतना कहते ही बाबाजी अपने सम्पूर्ण रूप “शिवरूप” बन कर गुफा से बाहर आये और गोरखनाथ को दर्शन दिये। गोरखनाथ ने जब शिव रूप बाबाजी को देखकर तो धन्य—धन्य हो गया।

जब बाबाजी ने गोरखनाथ से कहे कि “हे गोरखनाथ, अगर मैं तुम्हें खत्म करना चाहता तो शाहतलाई में ही खत्म कर देता, लेकिन मैं तुम्हारा अहंकार तोडना चाहता था चूकी तुमने प्रभु कि बडी भक्ति की है और तुम्हारे द्वारा कलयुग में लाखों लोगों का उद्धार होगा इस लिये जाओ गोरखनाथ जाकर अपना स्थान सम्भालो तब गोरखनाथ ने बाबाजी से कहे कि हे प्रभू जहाँ—जहाँ भी तुम्हारे नाम की पूजा होगी, वहाँ पर मेरे नाम की गालियों मिलेंगी। लेकिन बाबाजी ने गोरखनाथ को वचन दिया कि गोरखनाथ जहाँ—जहाँ भी मेरे नाम की पूजा और कीर्तन होंगे वहाँ तुम्हारे नाम के भी जय कारे लगाये जायेंगे। यह कह कर बाबाजी वहाँ से अदृश्य हो गये। कुछ समय बाद बाबाजी से आज्ञा पाकर भरतहरी अलवर नगरी को (राजस्थान) चले गये। अलवर में एक गुफा है भरतहरी वहाँ पर अपना आसान लागाकर प्रभु भक्ति में लीन होकर अमर हो गये।

“बोलो सांचे दरबार की जय”

“जय बाबे दी”